Day 5 (H)
Paper II

महात्मा गांधी
(Mahatma Gandhi)
सत्य और अहिंसा :-

* परिचय
* सत्य और अहिंसा
* अहिंसा मानव जाति की विकासात्मक शक्ति
* अहिंसा की व्यापकता
* अहिंसा के सामाजिक एवं राजनीतिक आयाम
* अहिंसा के अन्तर्राष्ट्रीय आयाम
* निष्कर्ष

परिचय: सत्य और अहिंसा गांधीवादी विचारधारा का सर्वोत्तम सिद्धान्त है। सत्य और अहिंसा को गांधी जी मनुष्य में अन्तर्निहित भाव के विकास के लिए अपरिहार्य समझते थे। इन दोनों का एक अविभाज्य जोड़ा है। गांधी जी के लिए सत्य ईश्वर है और जो व्यक्ति दूसरे को नुकसान पहुंचाता है, सत्य का उल्लंघन करता है, हिंसा असत्य है, क्योंकि यह जीवन की एकता और पवित्रता के विरुद्ध है, इसलिए जीवन में अहिंसा का पालन करना सत्य के आग्रह का सबसे बड़ा कर्तव्य है। सत्य और अहिंसा को सर्वोपरि रखना गांधी जी की कोई मौलिक बात नहीं थी। उन्होंने अहिंसा को व्यापक अर्थ दिया।

सत्य: सत्य क्या है? इसके अर्थ में गांधी जी ने कहा था "यह एक बड़ा कठिन प्रश्न है, किन्तु स्वयं अपने लिए मैंने इसे हल कर लिया है। तुम्हारी अन्तरात्मा जो कहती है, वही सत्य है।" यह सत्य को ग्रहण कर उसे व्यक्त करने के लिए अन्तरात्मा शुद्ध होनी चाहिए, क्योंकि शुद्ध अन्तरात्मा की वाणी ही सत्य हो सकती है। अन्तरात्मा की शुद्धि के लिए साधना की आवश्यकता होती है और साधना जीवन के सत्य, अहिंसा, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को अपनाकर ही की जा सकती है।

अहिंसा: गांधी जी अहिंसा को मानव का प्राकृतिक गुण मानते थे और उनका विचार था कि मनुष्य स्वभावतः अहिंसाप्रिय है तथा वह परिस्थितियों वश ही हिंसात्मक बनता है। मनुष्य अहिंसक प्रवृत्ति का ही परिणाम है कि आदिमकालीन व्यक्ति जो नरभक्षी के रूप में जीवन व्यतीत करता था, आज वह सुसंस्कृत प्राणी बन गया है। संसार में हिंसा का पूर्ण अभाव नहीं है, यह संसार में विद्यमान है और कभी-कभी अपना वह रौद्र रूप भी प्रकट करती है, परन्तु मानव समाज का इतिहास बताता है कि मनुष्य मूल रूप में अहिंसाप्रिय है और अहिंसक प्रवृत्ति के कारण ही मानव जाति निरन्तर आगे बढ़ती जा रही है।

Ajanta Oxford

Scanned with CamScanner

अहिंसा मानव जाति की महानतम शक्ति

गांधीवाद की मूल धारणा है कि अहिंसा मानव जाति के पास उपलब्ध महानतम शक्ति है। वे अहिंसा को विश्व के विनाशकारी शस्त्रों की तुलना में भी अधिक शक्तिशाली मानते थे। अहिंसा एक जीवन्त शक्ति है तथा पूरा संसार इस शक्ति द्वारा नियंत्रित एवं संचालित है। गांधीवाद की मूल धारणा यह है :

(1) अहिंसा मानवीय जीवन की स्वाभाविक प्रकृति : गांधीजी का विचार है कि हिंसा नहीं, वरन् अहिंसा ही मानवीय जीवन स्वाभाविक प्रकृति है। अज्ञान, स्वार्थ और क्रोध से व्यक्ति कभी-कभी हिंसक मार्ग अपनाता है लेकिन यह विकार अस्थायी स्थिति है।

(2) अहिंसा, हिंसा की तुलना में अधिक प्रभावकारी : गांधीजी की यह मान्यता है कि अहिंसा, हिंसा की तुलना में नैतिक और व्यावहारिक, दोनों ही दृष्टियों से अधिक प्रभावशाली है। हिंसा से कोई समस्या या कोई उलझन का हल नहीं होगा, वह केवल प्रतिहिंसा को जन्म देती है, लेकिन अहिंसा विरोधी के दिल पर स्थायी विजय दिलाने में समर्थ है।

(3) अहिंसा की सफलता सुनिश्चित है : ~~गांधीजी की यह मान्यता है कि अहिंसा, हिंसा की तुलना में नैतिक और व्यावहारिक, दोनों ही दृष्टियों से अधिक प्रभावशाली है।~~

अहिंसक मार्ग को अपनाकर सफलता प्राप्त करने में समय लग सकता है, लेकिन सफलता सुनिश्चित है। गांधीजी के अनुसार, "अहिंसा ऐसा शस्त्र है, जिसे कोई भी भौतिक बल झुका नहीं सकता। अहिंसा की शक्ति को संख्या की सीमा में नहीं बांधा जा सकता।

अहिंसा का वास्तविक धारणाएँ

गांधीजी के अनुसार, अहिंसा का अर्थ केवल हत्या न करना ही नहीं है, वरन् अहिंसा से उनका तात्पर्य अन्य किसी प्रकार से भी अपने विरोधी को कष्ट न पहुंचाना है। 7 मार्च 1930 ई 'यंग इंडिया' के अंक में गांधीजी ने लिखा था कि, "पूर्ण अहिंसा सभी प्राणियों के प्रति दुर्भावना के अभाव का नाम है। इस प्रकार अहिंसा अपने क्रियात्मक रूप में सभी जीवधारियों के प्रति सद्भावना का नाम है। यह तो विशुद्ध प्रेम है।

अनेक व्यक्तियों द्वारा गलत अहिंसा का आशय यह समझ लिया जाता है कि बुराई को न रोकना या बुराई के सामने घुटने टेक देना ही अहिंसा है लेकिन अहिंसा किसी अत्याचार या उसके सामने आत्मसमर्पण का आदेश नहीं देती स्वयं गांधीजी के शब्दों में, "अहिंसा का तात्पर्य अत्याचारी के प्रति नम्रतापूर्वक समर्पण नहीं है, वरन् इसका तात्पर्य अत्याचारी की मनमानी इच्छा का आत्मिक बल के आधार पर प्रतिरोध करना है।"

Scanned with CamScanner

महात्मा गांधी का दृढ़ विश्वास था कि मनुष्य और समाज की स्थिति में सम्पूर्ण क्रांति के आधार पर नहीं वरन अहिंसात्मक पद्धति के आधार पर ही सुधार संभव है। उनका विश्वास था कि प्रत्येक मनुष्य में आध्यात्मिक शक्ति होती है और नैतिक प्रयत्न द्वारा इस आंतरिक शक्ति को जाग्रत करके उसका हृदय परिवर्तन किया जा सकता है। गांधीजी का विश्वास था कि अहिंसा से कठोर हृदय को भी पिघलाकर शक्ति होती है। अहिंसा आत्मिक बल का प्रतीक है होती है।

गांधीजी की मान्यता है कि अहिंसा कोई जड़ सिद्धांत नहीं है, बल्कि यह एक आंतरिक नैतिक आस्था है। गांधीजी के लिए अहिंसा आस्था और निष्ठा का विषय है, कोई व्यावहारिक नीति नहीं है। गांधीजी ने अहिंसा के अनेक रूप बताए हैं :-

(1) <u>जाग्रत अहिंसा</u> : जाग्रत अहिंसा आत्मिक-शक्ति-सम्पन्न व्यक्तियों की अहिंसा है। अहिंसा के रूप को कुछ कारणों से नहीं वरन् नैतिक धारणाओं के दृढ़ विश्वास के कारण ही अपनाया जा सकता है। जाग्रत अहिंसा से पूर्ण व्यक्ति में प्रभाव करने की क्षमता रखती है किन्तु यह सबका उपयुक्त नहीं था।

(2) <u>औचित्यपूर्ण अहिंसा</u> : यह निर्बल व्यक्तियों की अहिंसा या असहाय व्यक्तियों का 'निष्क्रिय प्रतिरोध' होती है। इसमें नैतिक विश्वास के कारण नहीं वरन् निर्बलता के कारण ही हिंसा का प्रयोग नहीं किया जाता है। फिर भी यदि इसे ईमानदारी, साहस और सावधानीपूर्वक एक नीति के रूप में अपनाया जाए तो कुछ सीमा तक वांछित लक्ष्य प्राप्त की जा सकती है। औचित्यपूर्ण अहिंसा को व्यावहारिक अहिंसा भी कहा जा सकता है।

(3) <u>कायरों की अहिंसा</u> : कई बार डरपोक और कायर व्यक्ति भी अहिंसा का दम भरते हैं, किन्तु इनकी अकर्मण्यता को अहिंसा नहीं वरन डरपोक और कायर व्यक्तियों की निष्क्रियता कहा जाना चाहिए। एक डरपोक संकट का सामना करने की अपेक्षा उससे भाग जाता है, जो नितान्त अमानवीय, अप्राकृतिक और अपमानजनक है। गांधीजी के शब्दों में, "कायरता और अहिंसा, पानी और आग की भांति एक साथ नहीं रह सकते।"

<u>अहिंसा के सामाजिक व राजनीतिक आयाम</u>

अहिंसा, गांधीजी के अनुसार केवल व्यक्ति का सद्गुण नहीं, वरन सामाजिक जीवन और राजनीतिक व्यवस्था का भी निर्णायक आधार है। यदि हम अहिंसा को व्यक्तिगत सद्गुण तक सीमित रखते हैं तो यह अहिंसा की व्यापक और रचनात्मक शक्ति का अवमूल्यन होगा।

Scanned with CamScanner

महात्मा गांधी ने इस बात पर बल दिया है कि अहिंसा न केवल सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विकृतियों को दूर करने में सहायक है, वरन् एक आदर्श सामाजिक और राजनीतिक व्यवस्था का मूल आधार अहिंसा ही बन सकती है।

अहिंसा के अन्तर्राष्ट्रीय आयाम

गांधीजी के अनुसार अहिंसा अन्तर्राष्ट्रीय जीवन और व्यवस्था का भी निर्णायक आधार बन सकती है। गांधी जी के अनुसार अहिंसा के माध्यम से ही एक न्याय पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय व्यवस्था का निर्माण किया जाना संभव है। उनका मत है कि अहिंसा के द्वारा किसी भी अन्तर्राष्ट्रीय समस्या का समाधान किया जा सकता है तथा इसमें अहिंसक आन्दोलन की नीति अपनाकर निहत्थे भी शक्तिशाली आक्रमणकारी के आक्रमण को भी निष्फल किया जा सकता है।

आधुनिक युग की दुविधा नैतिक पतन है। सत्य और अहिंसा पर आधारित साध्य-साधन गांधीजी इस बात पर जोर देते हैं कि हमारे साध्य साधन के अनुरूप ही होने चाहिए। हमारा आदर्श नैतिक हो केवल इतना ही पर्याप्त नहीं है, यह बात भी उतनी ही आवश्यक है कि हमारे साधन भी नैतिक हों। गांधीजी का विचार था कि मनुष्य की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक आवश्यकताएं, मूल रूप से नैतिक आवश्यकताएं ही हैं और इनका समाधान भी नैतिक साधनों के द्वारा किया जाना चाहिए। अतएव गांधी जी कहा करते थे कि व्यक्ति की आत्मिक शुद्धि की महत्ता सबसे अधिक महत्वपूर्ण है।

——— x —

Girijesh Singh Asst. Professor
Deptt: Political Science
R.N. College Pandaul, Madhubani
Class : Deg. 1 (H) Paper-II
Topic : Gandhiji (सत्य और अहिंसा)
Date : 05/05/2020

Scanned with CamScanner